Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

1CO

1 कुरिन्थियों 1:1–17, 1 कुरिन्थियों 1:18–31, 1 कुरिन्थियों 2:1–16, 1 कुरिन्थियों 3:1–9, 1 कुरिन्थियों 3:10–23, 1 कुरिन्थियों 4:1–21, 1 कुरिन्थियों 5:1–13, 1 कुरिन्थियों 6:1–11, 1 कुरिन्थियों 6:12–20, 1 कुरिन्थियों 7:1–16, 1 कुरिन्थियों 7:17–40, 1 कुरिन्थियों 8:1–13, 1 कुरिन्थियों 9:1–18, 1 कुरिन्थियों 9:19–27, 1 कुरिन्थियों 10:1–13, 1 कुरिन्थियों 10:14–11:1, 1 कुरिन्थियों 11:2–16, 1 कुरिन्थियों 11:17–34, 1 कुरिन्थियों 12:1–11, 1 कुरिन्थियों 12:12–31, 1 कुरिन्थियों 13:1–13, 1 कुरिन्थियों 14:1–25, 1 कुरिन्थियों 14:26–40, 1 कुरिन्थियों 15:1–19, 1 कुरिन्थियों 15:20–34, 1 कुरिन्थियों 15:35–58, 1 कुरिन्थियों 16:1–24

1 कुरिन्थियों 1:1–17

पौलुस ने कुरिन्थ में कलीसिया की स्थापना करने में सहायता की थी (प्रेरितों के काम 18:1–18)। पौलुस एक वर्ष से अधिक समय तक कुरिन्थ में रहा और यीशु के बारे में शिक्षा देता रहा।

इस पत्र में, पौलुस ने कुरिन्थियों को याद दिलाया कि परमेश्वर ने उसे प्रेरित बनने के लिए चुना है। पौलुस ने कुरिन्थियों की सेवा अपने अधिकार के आधार पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के अधिकार के आधार पर की।

कुरिन्थ के निवासी परमेश्वर के लोगों का हिस्सा थे क्योंकि वे यीशु पर विश्वास करते थे। परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी और उन्हें यीशु के साथ जीवन दिया था।

पौलुस ने उनसे बहस बंद करने की विनती की। कुरिन्थ के विश्वासी विभिन्न समूहों में विभाजित हो गए थे जो विभिन्न मानव शिक्षकों का अनुसरण करते थे। ये शिक्षक पौलुस, अपुल्लोस और पतरस थे। फिर भी इन तीनों पुरुषों ने लोगों को केवल प्रभु यीशु मसीह का अनुसरण करने की शिक्षा दी।

पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि कुरिन्थियों को किसी भी मानव शिक्षक का अनुसरण नहीं करना चाहिए। प्रभु के रूप में यीशु की सेवा करना उनके अनुयायियों को एक साथ लाता है।

1 कुरिन्थियों 1:18–31

परमेश्वर का ज्ञान उस ज्ञान से बहुत भिन्न है जिसे पौलुस ने संसार का ज्ञान कहा। वह पाप और पापपूर्ण इच्छाओं पर आधारित सोच और कार्य के तरीकों के बारे में बात कर रहे थे।

परमेश्वर का ज्ञान परमेश्वर के मार्गों पर आधारित नहीं है। पौलुस ने दिखाया कि परमेश्वर उन तरीकों से कार्य करते हैं जिनकी लोग अपेक्षा नहीं करते। वे अक्सर उन चीजों और लोगों के माध्यम से कार्य करते हैं जिन्हें मूर्ख और महत्वहीन समझा जाता है।

इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि कैसे यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया और उनकी मृत्यु हो गई। यीशु के आस-पास के लोगों को ऐसा लग रहा था कि वह पूरी तरह से असफल हो गया है। परन्तु परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के माध्यम से सामर्थी कार्य किया। अपनी मृत्यु के माध्यम से, यीशु ने लोगों को पाप और मृत्यु की शक्ति से मुक्त किया।

क्रूस पर, यीशु कमजोर और मूर्ख प्रतीत हुए। परन्तु वास्तव में वे सामर्थी और बुद्धिमान थे। यीशु के अनुयायियों को अपनी खुद की बुद्धि या ताकत पर घमंड नहीं करना चाहिए। इसके बजाय उन्हें प्रभु के अद्भुत कार्यों के बारे में दूसरों को बताना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 2:1–16

पौलुस कुरिन्थियों के लिए उदाहरण थे कि कैसे परमेश्वर कमजोर लोगों के माध्यम से कार्य करते हैं। पौलुस ने उनके साथ चतुराई और चालाकी से व्यवहार नहीं किया। उसने उन्हें परमेश्वर के प्रेम और यीशु की क्रूस पर मृत्यु के बारे में सिखाया।

यह पौलुस के शब्द या उसके बोलने का तरीका नहीं था जिसने कुरिन्थियों को विश्वास दिलाया। कुरिंथ के लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया क्योंकि उन्होंने पौलुस के माध्यम से पवित्र आत्मा की सामर्थ को कार्य करते देखा। परमेश्वर की सामर्थ के बिना पौलुस कमजोर था।

पौलुस ने समझाया कि कैसे परमेश्वर की सामर्थ और ज्ञान, संसार की सामर्थ और ज्ञान से भिन्न हैं। वे उन मानव अधिकारियों के बारे में बात कर रहे थे जो सोचते हैं कि उनके पास बहुत सामर्थ है। वे दूसरों को नियंत्रित करने और उन्हें बलपूर्वक काम करवाने की कोशिश करते हैं। ऐसे ही शासकों ने यीशु को मरवा दिया था।

वे मसीह के रहस्य को नहीं समझे। वे यह नहीं समझे कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं और सच्चे प्रभु हैं। वे यह नहीं समझे कि यीशु सेवा करने वाले अगुवे हैं। उन्होंने दूसरों के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया।

यीशु के बारे में यह संदेश केवल मनुष्यों के सोचने के तरीके से नहीं समझा जा सकता। लोगों को आध्यात्मिक बातों को समझने के लिए परमेश्वर की आत्मा की सहायता की आवश्यकता होती है। पवित्र आत्मा विश्वासियों को परमेश्वर की बुद्धि सिखाते हैं। इस प्रकार वे यीशु की तरह सोच सकते हैं और कार्य कर सकते हैं। वे वही कर सकते हैं जो परमेश्वर उनसे चाहते हैं। यही मसीह की बुद्धि को धारण करने का अर्थ है।

1 कुरिन्थियों 3:1–9

कुरिन्थ के विश्वासी आध्यात्मिक रूप से परिपक्व नहीं हुए थे, न ही उनका विश्वास मजबूत हुआ था। पौलुस ने कहा कि वे अभी भी अपने विश्वास में बच्चों की तरह थे। उन्होंने यीशु के बारे में सुना था और उन पर विश्वास किया था। परन्तु वे पवित्र आत्मा से भरे हुए लोगों के समान नहीं जी रहे थे। वे अभी भी उसी तरह जी रहे थे जैसे वे यीशु पर भरोसा करने से पहले जी रहे थे।

यही कारण था कि वे ईर्ष्या करते थे और बहस करते थे। पौलुस ने कहा कि वे लोग संसार के तरीकों पर चल रहे थे। वह पापमय जीवन के तरीकों की बात कर रहे थे। उन तरीकों ने विश्वासियों को यीशु के स्वस्थ और मजबूत अनुयायी बनने से रोका।

फिर पौलुस ने समझाया कि विश्वासी खेत के समान हैं। जब लोग दूसरों को यीशु के बारे में बताते हैं, तो यह ऐसा है जैसे वे खेत में बीज बोते और पानी देते हैं। पौलुस और अपुल्लोस ने कुरिन्थ की कलीसिया के लिए ऐसा किया था। खेत परमेश्वर का है। परमेश्वर बीजों को स्वस्थ पौधों में बढ़ाते हैं। यह इस बात का चित्रण है कि कैसे विश्वासी यीशु पर विश्वास करते हुए और उनका अनुसरण करते हुए बढ़ते हैं।

1 कुरिन्थियों 3:10–23

जो विश्वासी यीशु के बारे में सुसमाचार साझा करते हैं, वे परमेश्वर के लिए राजमिस्त्री होते हैं। पौलुस ने उन्हें इसी प्रकार वर्णित किया। जब वे लोगों को यीशु के बारे में बताते हैं, तो यह ऐसा होता है जैसे वे इमारत की नींव रखते हैं। पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया के लिए ऐसा किया।

पौलुस ने कुरिन्थियों के लोगों से पूछा कि वे उस नींव पर क्या निर्माण कर रहे थे जो उन्होंने रखी थी। वे इस बारे में बात कर रहे थे कि वे अपने विश्वास को कैसे व्यवहार में ला रहे थे।

परमेश्वर लोगों के विचारों और कार्यों का परीक्षण करेंगे और उनका न्याय करेंगे। यीशु के बारे में जो शिक्षाएँ सत्य नहीं हैं, वे उस इमारत की तरह जल जाएँगी जो आग पकड़ लेती है। कार्य जो परमेश्वर की आत्मा पर आधारित नहीं है, वह भी जल जाएगा। जो सत्य है और यीशु पर आधारित है, वह न्याय के दिन तक स्थिर रहेगा। उसे परमेश्वर की आशीष प्राप्त होगी।

पौलुस चाहता था कि कुरिन्थ के लोग उन बुद्धिमान राजमिस्त्रियों के समान बनें जिनके विषय में यीशु ने मत्ती 7:24–29 में सिखाया था। बुद्धिमान निर्माता यीशु की सुनते हैं और उनका पालन करते हैं। मूर्ख निर्माता अपनी या अन्य मानव शिक्षकों की बातों का अनुसरण करते हैं। जिस भवन के बारे में पौलुस ने बात की, वह मंदिर था। यीशु नींव हैं। यीशु के अनुयायी स्वयं भवन हैं। पवित्र आत्मा उनके बीच निवास करते हैं। यह इस बात का चित्रण है कि कैसे परमेश्वर विश्वासियों के माध्यम से पृथ्वी पर उपस्थित हैं।

1 कुरिन्थियों 4:1–21

पौलुस ने यह बताते हुए स्वयं का और अपुल्लोस का उदाहरण दिया कि कलीसिया के अगुवों को कैसा होना चाहिए। कलीसिया के अगुवे मसीह के सेवक होते हैं। परमेश्वर ने उन्हें दूसरों को यीशु के बारे में सत्य सिखाने का कार्य सौंपा है।

पौलुस ने यीशु की शिक्षाओं को रहस्यों के रूप में वर्णित किया। वे खजाने की तरह हैं जिसकी देखभाल कलीसिया के अगुवों को विश्वासपूर्वक करनी चाहिए। परमेश्वर यह न्याय करेंगे कि अगुवों ने यह कार्य कितनी अच्छी तरह से किया है। विश्वासयोग्य कलीसिया के अगुवे यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं जब वे लोगों को सिखाते और सेवा करते हैं। वे अक्सर कष्टों का सामना करते हैं और उन्हें कमजोर और मूर्ख समझा जा सकता है। यहाँ तक कि जब उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है, तब भी वे उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करते रहते हैं जिन्होंने उन्हें दुख पहुँचाया है।

अगुवे उन लोगों के लिए आध्यात्मिक माता-पिता के समान हैं जिनके साथ वे सुसमाचार साझा करते हैं। अगुवों के तौर पर उन्हें अन्य विश्वासियों के लिए सेवा करने का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। फिर भी कुरिन्थ के विश्वासियों ने पौलुस के उदाहरण का पालन नहीं किया। उनमें से कई लोगों ने सोचा कि यीशु के साथ जीवन में कोई कठिनाई नहीं होगी। वे सोचते थे कि उन्हें हर वह चीज़ मिल जाएगी जिसकी उन्हें आवश्यकता है और जिसकी वह इच्छा रखते हैं। और वे इस बात पर झगड़ रहे थे कि कलीसिया का कौन सा अगुवा बेहतर है। पौलुस ने स्पष्ट कर दिया कि उन्हें ऐसा करना बंद करना होगा। जो कुछ भी कलीसिया के अगुवों और विश्वासियों के पास है वह परमेश्वर का वरदान है। और परमेश्वर के वरदानों का उपयोग दूसरों की सेवा के लिए किया जाना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 5:1–13

कुरिन्थ की कलीसिया ने विश्वासियों को पाप करते रहने और जानबूझकर हानि पहुँचाने की अनुमति दी। वे इस पर गर्व करते थे। वे जानते थे कि यीशु ने उन्हें पाप के दास होने से मुक्त कर दिया है। मसीह ने ऐसा तब किया जब उन्होंने फसह के पर्व पर स्वयं को परमेश्वर के मेम्ने के रूप में बलिदान कर दिया।

इसी कारण से, कुरिन्थियों के लोगों ने पाप को गंभीर समस्या के रूप में नहीं देखा। पौलुस ने पाप और बुराई को खमीर की तरह बताया जो रोटी के आटे में फैलता है। यीशु का अनुसरण करने से पहले कुरिन्थियों के विश्वासियों ने पापपूर्ण तरीकों में जीवन बिताया था। उन तरीकों में घमंड, अहंकार, घृणा, यौन पाप और अधिक से अधिक चीजों की चाहत शामिल थी। इनमें झूठ बोलना, धोखा देना और झूठे देवताओं की मूर्तियों की पूजा करना भी शामिल था।

पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि विश्वासियों को पाप से कोई संबंध नहीं रखना चाहिए। इसके बजाय, विश्वासियों को ऐसे तरीकों से जीना चाहिए जो ईमानदार और सच्चे हों। यही पवित्र जीवन है। पौलुस ने इसे बिना खमीर के नए आटे के गुच्छे के रूप में वर्णित किया। बिना खमीर की रोटी वही है जो यहूदी फसह के पर्व के दौरान खाते थे।

पौलुस ने समझाया कि कुरिन्थियों को उन विश्वासियों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए जो अपने पाप पर गर्व करते थे। उन्हें उनका न्याय करना था, जिसका अर्थ है समस्या को पहचानना और उसे रोकने के लिए कदम उठाना। उन्हें ऐसे लोगों से दूर रहना था। जो लोग अपने पाप पर गर्व करते हैं, उन्हें कलीसिया समुदाय में रहने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो लोग पाप करते रहना चाहते हैं, वे यीशु की सेवा प्रभु के रूप में नहीं कर रहे हैं। वे ऐसा नुकसान पहुँचा रहे हैं जो कलीसिया को नष्ट कर सकता है। और कुरिन्थियों को ऐसे लोगों को शैतान के हवाले सौंप देना था। शैतान दुष्ट आत्मा का दूसरा नाम है।

इसका अर्थ था कि ऐसे लोगों को अपने पापों से पश्चाताप करना चाहिए और उनसे दूर हो जाना चाहिए। तब तक, उन्हें परमेश्वर के राज्य के बजाय शैतान के राज्य का हिस्सा माना जाना था।।

1 कुरिन्थियों 6:1–11

कुरिन्थ के विश्वासी एक दूसरे से सहमत नहीं रहते थे। वे एक-दूसरे के खिलाफ न्यायालय में जाया करते थे। वे विश्वास न रखने वाले न्यायाधीशों पर भरोसा करते थे कि वे उनके लिए सही निर्णय लेंगे। पौलुस ने इसके कई समस्याओं की ओर इशारा किया।

पौलुस ने पहले ही उनसे झगड़ा बंद करने की विनती की थी। यहाँ पौलुस उनसे विनती करता है कि वे अपनी समस्याओं का समाधान धार्मिक तरीके से करें। उन्हें कभी भी दूसरों को धोखा नहीं देना चाहिए या किसी के साथ गलत नहीं करना चाहिए। उन्हें सभी लोगों के साथ भलाई करनी चाहिए, यहाँ तक कि उन लोगों के साथ भी जो उनके साथ गलत करते हैं। उन्हें एक-दूसरे के साथ समस्याओं के लिए समझदार विश्वासियों से मदद लेनी चाहिए।

पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को याद दिलाया कि यीशु ने उनके जीवन में पाप की शक्ति को समाप्त कर दिया। उन्होंने उन्हें परमेश्वर के साथ सही बना दिया। इसका मतलब है कि वे परमेश्वर के राज्य का हिस्सा होंगे। जब परमेश्वर का राज्य पूरी तरह आएगा, तो यीशु अपनी अधिकारिता उनके साथ साझा करेंगे।

यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि वे इस्राएल की 12 जातियों का न्याय करेंगे (मत्ती 19:28)। पौलुस ने समझाया कि विश्वास करने वाले पूरे संसार का और यहाँ तक कि स्वर्गदूतों का भी न्याय करेंगे। यही वह भविष्य है जिसकी ओर विश्वास करने वाले देखते हैं। इसलिए उन्हें अब समझदारी से निर्णय लेना सीखना चाहिए

1 कुरिन्थियों 6:12–20

बहुत से यूनानी (यूनान) विचारकों का मानना था कि आध्यात्मिक चीजें भौतिक चीजों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने सिखाया कि लोगों की आत्माएं उनकी देह से अधिक महत्वपूर्ण हैं। इससे कुछ लोगों को पौलुस के समय में यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि उनकी देह अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। वे सोचते थे कि वे अपनी देह के साथ जो चाहें कर सकते हैं।

कुरिन्थ की कलीसिया में बहुत से लोगों ने इस विचार को स्वीकार कर लिया। वे सोचते थे कि वे जैसे चाहें वैसे यौन संबंध बना सकते हैं। वे सोचते थे कि इससे परमेश्वर या अन्य विश्वासियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वे सोचते थे कि इससे उनकी आत्मा पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। यह सोच पौलुस की स्वतंत्रता की शिक्षा को न समझने का परिणाम था।

पौलुस ने कुरिन्थियों को दिखाया कि लोगों की देह और उनकी आत्माएं परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण हैं। परमेश्वर ने यीशु की देह को मृतकों में से जीवित किया। वह उन विश्वासियों की देहों को भी जिलाएगा जो मर चुके हैं। जो लोग यीशु का अनुसरण करते हैं, वे आत्मा में उनके साथ एक हैं क्योंकि वे उन पर विश्वास करते हैं। पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी के साथ हमेशा रहते हैं क्योंकि वे उनकी देह में अंदर निवास करते हैं। और प्रत्येक विश्वासी की देह मसीह की देह का हिस्सा है। यही कलीसिया है।

विश्वासी अपनी देह से जो कुछ भी करते हैं, वह कलीसिया की मदद या हानि कर सकता है। पौलुस ने इसका उदाहरण 1 कुरिन्थियों 5:1–5 में लिखा था। इसलिए विश्वासियों को अपनी देह का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए करना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 7:1–16

कुरिन्थियों के लोगों ने पौलुस को पत्र लिखकर अविवाहित होने, यौन संबंधों और विवाह के बारे में प्रश्न पूछे थे। पौलुस ने यीशु की शिक्षाओं के आधार पर उनके प्रश्नों का उत्तर दिया कि कैसे जीवन जीना चाहिए।

यीशु ने प्रत्येक मनुष्य को महत्वपूर्ण माना। उनकी आवश्यकताएँ परमेश्वर के लिए मायने रखती थीं। उन्होंने दूसरों की सेवा की और उनके लिए जो अच्छा था, वह किया। पौलुस ने उदाहरण दिखाए कि यह विवाह और यौन संबंधों पर कैसे लागू होता है।।

कुछ कुरिन्थियों के लोगों का मानना था कि यदि वे परमेश्वर का विश्वासपूर्वक अनुसरण करते हैं, तो उन्हें यौन संबंध नहीं रखना चाहिए। पौलुस ने समझाया कि दंपतियों को एक-दूसरे की देह की देखभाल करनी चाहिए और यौन संबंधों का आनंद लेना चाहिए। पौलुस ने उन लोगों को अविवाहित रहने के लिए प्रोत्साहित किया जिन्होंने विवाह नहीं किया था। परन्तु उन्होंने एक बात स्पष्ट की की प्रत्येक मनुष्य को यह चुनने की स्वतंत्रता है कि वे विवाह करें या अविवाहित रहें। महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग अपनी देह से परमेश्वर का आदर करें।

1 कुरिन्थियों 7:17–40

कुरिन्थ के लोग इस बात को लेकर चिंतित थे कि वे सही बदलाव कैसे करें ताकि वे मसीह के हो सकें। वे सोचते थे कि उन्हें अपनी देह, अपने काम और अपने संबंधों में बदलाव करने की आवश्यकता है। वे सोचते थे कि ये बदलाव उन्हें परमेश्वर और दूसरों के लिए अधिक स्वीकार्य बना देंगे।

पौलुस ने बताया था कि कुरिन्थियों का क्या हाल था जब उन्होंने पहली बार यीशु पर विश्वास किया। उन्हें बुद्धिमान, सामर्थी या महत्वपूर्ण नहीं माना जाता था। फिर भी परमेश्वर ने उनसे प्रेम किया और उन्हें चुना। इस कारण से वे परमेश्वर के परिवार का हिस्सा थे।

पौलुस ने कुछ बात बहुत स्पष्ट की। कुरिन्थियों द्वारा किए गए कोई भी बदलाव से उनके लिए परमेश्वर के प्रेम की सच्चाई नहीं बदल सकती थी। इसमें दास से स्वतंत्र मनुष्य बनना शामिल था। इसमें खतना करवाना या न करवाना शामिल था। इसमें विवाह करना या न करना शामिल था। हर स्थिति में विश्वासियों का संबंध प्रभु से होता है। इसलिए वे अपने जीवन

में ऐसे चुनाव करने के लिए स्वतंत्र हैं जो परमेश्वर का आदर करेंगे।

पौलुस कुरिन्थ के लोगों से यह नहीं कह रहे थे कि वर्तमान संसार का कोई महत्व नहीं है। उनका कहना था कि प्रभु की सेवा उनके सभी योजनाओं का केंद्र होना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 8:1–13

कोरिंथ में कई लोग झूठे देवताओं की मूर्तियों की उपासना करते थे। यह रोमी शासन द्वारा शासित क्षेत्रों में सामान्य था।

जब लोग देवताओं की मूर्तियों की उपासना करते थे, तो वे देवताओं का सम्मान करने के लिए पशुओं की बलि देते थे। बलि दिए गए पशुओं का मांस बाजारों में बेचा जाता था। इसे भोजन में भी परोसा जाता था।

कुरिन्थ के विश्वासियों को जानना था कि क्या उन्हें यह मांस खाने की अनुमति है। वे जानते थे कि केवल एक ही सच्चे परमेश्वर हैं। वे जानते थे कि झूठे देवताओं की मूर्तियाँ किसी भी चीज़ का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं। इसलिए वे सोचते थे कि यदि वे झूठे देवताओं को अर्पित भोजन खा लें तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। वे इस बात पर बहुत गर्व करते थे कि वे कितना जानते हैं। वे सोचते थे कि उनका ज्ञान उन्हें दूसरों से बेहतर बनाता है।

पौलुस ने कहा कि एक-दूसरे से प्रेम करना और देखभाल करना उनके ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण था। यीशु के अनुयायियों को वह सब कुछ करना चाहिए जो परमेश्वर के परिवार के बाकी सदस्यों को प्रोत्साहित और मजबूत करता है।

1 कुरिन्थियों 9:1–18

पौलुस ने समझाया कि विश्वासियों के लिए स्वतंत्र होने का क्या अर्थ था। यीशु ने अपने अनुयायियों को पाप, मृत्यु और बुराई की शक्ति से स्वतंत्र किया। उन्होंने उन्हें इसलिए स्वतंत्र नहीं किया कि वे जो चाहें कर सकें। उन्होंने उन्हें इसलिए स्वतंत्र किया ताकि वे पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा मान सकें और दूसरों की सेवा कर सकें।

पौलुस ने स्वयं को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने उन सभी अधिकारों का वर्णन किया जो उनके पास प्रेरित के रूप में थे। एक अधिकार यह था कि उन कलीसियाओं के लोगों से धन प्राप्त करना जिनकी उन्होंने स्थापना में मदद की। यीशु और पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं से पता चला कि प्रेरितों को यह अधिकार था। पवित्रशास्त्र परमेश्वर का वचन है। यह आम बात थी कि अन्य प्रेरित अपने कार्य के लिए धन प्राप्त

करते थे। और अन्य प्रकार के श्रमिकों को उनके द्वारा किए गए कार्य के लिए लाभ प्राप्त हुआ।

पौलुस को यह अधिकार उपयोग करने की स्वतंत्रता थी, परन्तु उन्होंने इसे उपयोग न करने का निर्णय लिया। पौलुस मसीह के बारे में प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध थे, चाहे उन्हें इसके लिए भुगतान न मिले। यीशु के बारे में प्रचार करना पौलुस का कर्तव्य था और यही उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण था।

1 कुरिन्थियों 9:19–27

पौलुस ने केवल तब अपने अधिकारों का उपयोग किया जब इससे उन्हें यीशु के बारे में सत्य साझा करने में मदद मिली। उनके पास स्वतंत्र मनुष्य के सभी अधिकार थे। परन्तु उन्होंने दूसरों के लिए दास की तरह जीवन जिया। इसका मतलब यह था कि उन्होंने अपनी इच्छानुसार करने के अधिकार को त्याग दिया। इसके बजाय, उसने वही किया जो पवित्र आत्मा चाहता था कि वह अन्य लोगों के लिए करे।

पौलुस ने हर संभव तरीके से दूसरों की सेवा की। उन्होंने यह इसलिए किया ताकि वे यीशु पर विश्वास कर सकें। पौलुस को मूसा की व्यवस्था का पालन न करने की स्वतंत्रता थी। परन्तु जब वे यहूदियों के साथ होते थे, तो वे यहूदी व्यवस्थाओं का पालन करते थे। उन्होंने यह इसलिए किया ताकि यहूदियों को यीशु के बारे में बताने के अधिक अवसर मिल सकें।

पौलुस ने कहा कि उन्होंने अपनी देह को धावक या एक मुक्केबाज़ की तरह नियंत्रण में रखा जो कठिन प्रशिक्षण करता है। उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि उनका मन, हृदय और देह मसीह की व्यवस्था का पालन करें। एक विश्वासी के रूप में पौलुस की स्वतंत्रता का मतलब था कि वे पूरी तरह से यीशु की आज्ञा मानने के लिए स्वतंत्र थे।

1 कुरिन्थियों 10:1–13

कुरिन्थ के विश्वासियों को पता था कि मसीह ने उन्हें स्वतंत्र किया है। परन्तु स्वतंत्र होने का मतलब यह नहीं था कि उन्हें पाप करने की अनुमति थी। पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को उन तरीकों के बारे में चेतावनी दी जिनसे वे पाप करने के लिए प्रलोभित हो सकते थे। उन्होंने सैकड़ों साल पहले के इस्राएल के उदाहरणों का उपयोग किया।

अधिकांश कुरिन्थ के विश्वासी अन्यजातियों में से थे। परन्तु वे परमेश्वर के लोगों का हिस्सा थे और इस्राएल की गलतियों से सीख सकते थे। ये उदाहरण दिखाते हैं कि बुरी चीजों की इच्छा करना कितना खतरनाक है। विश्वासियों को बुरी चीजों की इच्छा करने या बुरी चीजें करने का प्रलोभन होगा। वे परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं कि वे उनकी मदद करेंगे और उन्हें बुराई को ना कहने की सामर्थ देंगे।

1 कुरिन्थियों 10:14–11:1

पौलुस ने यह बहुत स्पष्ट किया कि झूठे देवता वास्तविक नहीं हैं। वे सच्चे देवता नहीं हैं। उनके लिए अर्पित भोजन का कोई अर्थ नहीं है। विश्वासियों को वह भोजन खाने की स्वतंत्रता है।

परन्तु उन्हें सावधान रहने के दो कारण हैं। सबसे पहले, जब लोग झूठे देवताओं के लिए बलिदान करते हैं, तो वे वास्तव में दुष्ट आत्मिक प्राणियों का सम्मान करते हैं। विश्वासियों को किसी भी चीज़ से इंकार करना चाहिए जो उन्हें बुराई से जोड़ती है।

दूसरे, विश्वासियों को सावधान रहना चाहिए कि वे लोगों को सही या गलत के बारे में भ्रमित न करें। पौलुस ने इसे लोगों को ठोकर खिलाने और गिराने जैसा बताया। लोग सोच सकते हैं कि कोई विशेष भोजन खाना गलत है। यदि वे किसी विश्वासी को वह भोजन खाते हुए देखते हैं, तो वे सोच सकते हैं कि विश्वासी कुछ बुरा कर रहा है। इससे लोग परमेश्वर के बारे में सत्य पर संदेह कर सकते हैं और उन पर विश्वास नहीं कर सकते।

विश्वासियों को किसी भी चीज़ को खाने और पीने का अधिकार है जिसके लिए वे परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। परन्तु उस अधिकार का उपयोग करने से भी अधिक महत्वपूर्ण और कुछ है। यह है लोगों को यीशु में विश्वास करने और उनका अनुसरण करने में मदद करना। जब विश्वासी दूसरों की भलाई के लिए कार्य करते हैं, तो वे परमेश्वर को महिमा देते हैं।

1 कुरिन्थियों 11:2–16

परमेश्वर की आराधना विभिन्न स्थानों पर और विभिन्न समयों पर विभिन्न तरीकों से की जाती है। ये तरीके अक्सर इस पर आधारित होते हैं कि लोग जहाँ रहते हैं वहाँ क्या सामान्य और उचित है।

पौलुस के समय में भूमध्य सागर के आसपास के क्षेत्रों में बालों का बहुत महत्व था। महिलाओं के लिए अपने बाल लंबे रखना और सिर ढकना उचित माना जाता था। यह पुरुषों के लिए उचित नहीं माना जाता था।

कुरिन्थ के पुरुष विश्वासियों ने अपने बाल खास तरीके से रखे। वहीं, कुरिन्थ की महिला विश्वासियों ने अपने बालों के साथ कुछ और किया। परन्तु वे सभी प्रार्थना करते थे, भविष्यवाणी करते थे और परमेश्वर की आराधना करते थे। वे सभी परमेश्वर के अधिकार के अधीन थे।

1 कुरिन्थियों 11:17–34

कुरिन्थ के विश्वासियों ने जिस तरह से प्रभु भोज साझा किया, उससे कलीसिया को हानि पहुँची। इससे यह नहीं दिखा कि यीशु के अनुयायी एक होकर कैसे आए थे।

कुरिन्थ की कलीसिया विभिन्न समूहों में बँट गई थी। अमीरों और गरीबों के साथ अलग-अलग व्यवहार किया जाता था। कुछ लोग प्रभु भोज के दौरान दावत करते थे और यहाँ तक कि नशे में हो जाते थे। अन्य लोगों के पास खाने के लिए कुछ भी नहीं बचता था।

इसके परिणामस्वरूप, न्याय कलीसिया पर आ गया था। कुछ विश्वासियों को बीमारी ने जकड़ लिया और अन्य की मृत्यु हो गई थी।

पौलुस ने समझाया कि प्रभु भोज यीशु की मृत्यु को स्मरण करने और घोषित करने के बारे में है। यीशु ने अपनी देह को बलिदान के रूप में दिया ताकि परमेश्वर की प्रजा के साथ नई वाचा स्थापित कर सकें।

विश्वासियों को यीशु की देह का आदर करना चाहिए जो दफनाई गई थी और मृतकों में से जीवित की गयी थी। विश्वासियों को मसीह की देह में अन्य विश्वासियों का भी आदर करना चाहिए। इस प्रकार वे यीशु का भी आदर करते हैं। उनकी उपासना की प्रथाएँ उन्हें परमेश्वर के परिवार के रूप में एक-दूसरे की देखभाल करने में मदद करनी चाहिए।

1 कुरिन्थियों 12:1–11

पवित्र आत्मा लोगों को यह पहचानने में मदद करता है कि यीशु प्रभु और राजा हैं। जब कोई यीशु पर विश्वास करता है, तो पवित्र आत्मा उनके अंदर निवास करता है। आत्मा उन्हें जानता है और उन्हें यीशु के लिए जीने और उनकी सेवा करने में मदद करता है।

पवित्र आत्मा विश्वासियों को वरदान भी देता है। आत्मा के वरदान विश्वासियों को एक-दूसरे की सेवा करने में मदद करते हैं। आत्मा तय करता है कि किस व्यक्ति को कौन सा वरदान देना है। एक वरदान दूसरे से श्रेष्ठ नहीं होता। प्रत्येक वरदान विशेष और महत्वपूर्ण होता है। ये सभी पवित्र आत्मा से आते हैं। इन सबका इस्तेमाल यीशु के अनुयायियों के विश्वास को मज़बूत करने के लिए किया जाना है।

1 कुरिन्थियों 12:12–31

पौलुस ने कई तरीकों से कलीसिया को देह के समान बताया। कलीसिया विभिन्न प्रकार के लोगों से बनी है। वे विभिन्न स्थानों से आते हैं और सोचने और कार्य करने के विभिन्न तरीके रखते हैं। उनके पास आत्मा के अलग-अलग वरदान होते हैं। वे विभिन्न तरीकों से काम करते हैं और सेवा करते हैं।

इस प्रकार विश्वासियों की तुलना मानव देह के विभिन्न अंगों से की जा सकती है। जैसे मानव देह के अंग, वैसे ही विश्वासी साथ मिलकर कार्य करते हैं। वे एक साथ मिलकर यीशु की आज्ञा का पालन करते हैं और दूसरों को उनके बारे में बताते हैं।

पौलुस ने यह भी कहा कि कलीसिया वास्तव में मसीह की देह है। यीशु उस सिर के समान हैं जो देह को मार्गदर्शन और दिशा देते हैं (इफिसियों 5:23)। यीशु अब स्वर्ग में पिता के साथ शासन कर रहे हैं।

कलीसिया पवित्र आत्मा की सामर्थ के माध्यम से पृथ्वी पर उनका कार्य करती रहती है। इस प्रकार कलीसिया वह हिस्सा है जिसे अन्य लोग यीशु के रूप में देखते हैं। इस तरह कलीसिया पृथ्वी पर यीशु की देह के समान है जब तक कि वे वापस नहीं आते।

1 कुरिन्थियों 13:1–13

आत्मा द्वारा विश्वासियों को दिए गए वरदानों और क्षमताओं का उपयोग प्रेम के साथ किया जाना चाहिए। प्रेम कोई आत्मिक वरदान नहीं है। प्रेम जीवन जीने का तरीका है। यह वही तरीका है जिसे यीशु ने अपने अनुयायियों को जीने के लिए सिखाया। पौलुस ने इसे मसीह की व्यवस्था कहा।

उन्होंने कई तरीकों का उल्लेख किया जिनसे लोग प्रेम नहीं दिखाते। इनमें दूसरों की चीज़ों की इच्छा करना और डींग मारना शामिल है। इनमें लोगों का अपने आप पर घमंड करना और दूसरों से पहले अपनी देखभाल करना शामिल है। कुरिन्थ के विश्वासियों ने ये सभी काम किए।

फिर पौलुस ने प्रेम पर आधारित सोचने, महसूस करने और कार्य करने के तरीके बताए। प्रेम सदा के लिए रहता है। आत्मिक वरदान सदा के लिए नहीं रहेंगे। वे उस संसार का हिस्सा हैं जिसमें लोग अभी रहते हैं, जो अभी तक पूर्ण नहीं हुआ है। पौलुस ने उस समय के बारे में बात की जब जो पूर्ण है वह आएगा। वे नई सृष्टि के बारे में बात कर रहे थे।

वर्तमान संसार और नई सृष्टि में बड़ा अंतर है। यह उस अंतर के समान है जब हम किसी धुंधले दर्पण के माध्यम से देखते हैं और जब हम सीधे किसी चीज़ को देखने में होता है। विश्वासी नई सृष्टि की प्रतीक्षा विश्वास और आशा के साथ करते हैं। जब तक वे प्रतीक्षा करते हैं, वे यीशु के प्रेम के मार्ग का अनुसरण करते हैं।

1 कुरिन्थियों 14:1–25

कुरिंथ के कुछ विश्वासियों का मानना था कि कुछ आत्मिक वरदान दूसरे आत्मिक वरदानों से बेहतर हैं। पौलुस ने स्पष्ट किया कि यह सत्य नहीं था। इन वरदानों के अलग-अलग उद्देश्य होते हैं।

कई कुरिन्थियों के विश्वासियों को अन्य भाषाएँ बोलने की क्षमता थी। ये ऐसी भाषाएँ थीं जिन्हें वे पहले नहीं जानते थे। वे आत्मा के इस वरदान पर गर्व करते थे। पौलुस ने दिखाया कि उन्हें अन्य वरदानों की तुलना में भविष्यवाणी के वरदान की अधिक इच्छा क्यों करनी चाहिए। उन्होंने वरदानों का वर्णन इस आधार पर किया कि वे दूसरों को कितना प्रोत्साहित और मदद करते हैं।

जब लोग उन भाषाओं में बोलते हैं जिन्हें वे पहले नहीं जानते थे, तो यह उन्हें परमेश्वर से प्रार्थना करने में मदद करता है। वे परमेश्वर के साथ अपने संबंध में मजबूत होते हैं। यह अद्भुत बात है। परन्तु अन्य लोग यह नहीं समझते कि वे क्या कह रहे हैं। वे तभी समझ सकते हैं जब कोई अन्य भाषाओं को समझा सके। यदि संदेश समझाया नहीं जाता है, तो उसे सुनने वाले मजबूत या प्रोत्साहित नहीं होते हैं। बल्कि वे भ्रमित हो सकते हैं।

यह बहुत अधिक सहायक होता है कि विश्वासी भविष्यवाणियों को ऐसी भाषा में साझा करें जिसे हर कोई समझ सके। इससे दूसरों को उनके जीवन में पापमय तरीकों को पहचानने में मदद मिल सकती है। यह उन्हें सांत्वना भी दे सकता है और आशा भी प्रदान कर सकता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि विश्वासियों को अपने वरदानों का उपयोग इस प्रकार करना चाहिए जिससे कलीसिया मजबूत हो।

1 कुरिन्थियों 14:26–40

कुरिन्थ के विश्वासियों ने अपनी आराधना सभाओं में पवित्र आत्मा से मिले वरदानों का उपयोग किया। वे परमेश्वर की आराधना करते समय बहुत सक्रिय और उत्साहित थे। पौलुस ने यह स्वीकार किया कि यह अच्छा था।

परन्तु जब कुरिन्थ के लोग एकत्र होते थे, तो कुछ समस्याएँ उत्पन्न होती थीं। उनकी सभाएँ अनियंत्रित और अव्यवस्थित थीं। लोग ऐसी भाषाओं में संदेश साझा कर रहे थे जिन्हें कोई नहीं समझता था। कुछ सुनना मुश्किल था क्योंकि कई लोग एक साथ भविष्यवाणी कर रहे थे। कुछ महिलाएँ बहुत जोर से बात कर रही थीं, जिससे वे अन्य विश्वासियों को ध्यान देने से रोक रही थीं।

इसलिए पौलुस ने कुरिन्थ के लोगों को उनकी सभाओं में निर्देश पालन करने के लिए दिए। परमेश्वर शांति और व्यवस्था के परमेश्वर हैं। विश्वासियों को अपने वरदानों का उपयोग ऐसे तरीकों से करना चाहिए जो परमेश्वर की व्यवस्था को दर्शाते हैं।

1 कुरिन्थियों 15:1–19

यीशु मसीह वही मसीहा हैं जो मरे और फिर मरे हुओं में से जी उठे। यह यीशु के बारे में सुसमाचार का केंद्र है।

पौलुस ने इस संदेश का प्रचार कुरिन्थ के लोगों को सुनाया। यह वही संदेश था जिसका यीशु के सभी प्रेरितों ने प्रचार किया। प्रेरितों और कई अन्य लोगों ने यीशु को मृतकों में से जी उठने के बाद देखा था। वे उनके पुनरुत्थान के साक्षी थे।

परन्तु कुरिन्थ के कुछ विश्वासियों का कहना था कि यह संदेश सत्य नहीं है। वे नहीं मानते थे कि कोई मृतकों में से जीवित हो सकता है। पौलुस ने इस सोच का कड़ा विरोध किया। यदि कोई मृतकों में से जीवित नहीं हो सकता, तो मसीह स्वयं भी जीवित नहीं हुए। उनके पुनरुत्थान के बिना, यीशु के बारे में कोई सुसमाचार नहीं है।

सुसमाचार पाप और मृत्यु पर परमेश्वर की विजय के बारे में है। मृतकों में से यीशु का पुनरुत्थान इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर की विजय वास्तविक है। इसके बिना, विश्वासियों को मरने के बाद जीवन की आशा नहीं हो सकती। यीशु के पुनरुत्थान के बिना, यीशु में विश्वास का कोई अर्थ नहीं है।

1 कुरिन्थियों 15:20–34

पौलुस ने आदम के कार्यों के बारे में बात की। वह आदम के पाप के बारे में बात कर रहा था। जब आदम ने पाप किया, तो पाप और मृत्यु संसार में प्रवेश कर गए। इसका परिणाम यह हुआ कि मनुष्य मरते हैं।

पौलुस ने इस बारे में भी बात की कि मसीह ने क्या किया। वे इस बारे में बात कर रहा था कि यीशु ने बिना पाप किए कैसे जीवन जिया। यीशु की मृत्यु उसी तरह हुई जैसे आदम की हुई और जैसे सभी मनुष्यों की होती है। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें फिर मृतकों में से जीवित किया। यीशु पहले मनुष्य थे जिन्हें परमेश्वर से नया सामर्थी अनंत जीवन प्राप्त हुआ। वे उस जीवन को उन सभी के साथ साझा करते हैं जो उनका अनुसरण करते हैं। जब यीशु पृथ्वी पर लौटेंगे, पृथ्वी पर तब वे सभी मृतकों में से जीवित किए जाएंगे। उस समय वे बुराई, पाप और मृत्यु को पूरी तरह से नष्ट कर देंगे।

यह वही आशा है जिसे पौलुस ने उन सभी कलीसियाओं के साथ साझा किया जिन्हें उन्होंने स्थापित करने में मदद की। इस आशा ने उन्हें कठिनाइयों और कष्टों का सामना करने की सामर्थ दी। यह विश्वासियों को भी उनके जीवन की कठिनाइयों और कष्टों का सामना करने में मदद करती है।

1 कुरिन्थियों 15:35–58

पौलुस ने सिखाया कि सभी विश्वासियों की देह मृतकों में से जिलाई जाएगी। कुछ कुरिन्थ के विश्वासियों को यह समझ नहीं आ रहा था कि जब ऐसा होगा तो उनकी देह कैसी होगी । पौलुस ने उन्हें समझाने के लिए पृथ्वी पर दिखाई देने वाली चीजों का उदाहरण दिया।

पौधा उस बीज से बहुत अलग दिखता है जिससे वह उगता है। यह उसी तरह है जैसे किसी मनुष्य की देह में मृत्यु से पहले और पुनरुत्थान के बाद का अंतर होता है। मानव देह उन चीजों से बानी होती है जिन्हें परमेश्वर ने तब बनाया जब उन्होंने संसार की रचना की। इस प्रकार वे उस देह के समान हैं जिसे परमेश्वर ने आदम के लिए भूमि की मिट्टी से बनाया था (उत्पत्ति 2:7)। यही बात पौलुस ने पृथ्वी के मनुष्य के समान होने के बारे में कही थी।

जब विश्वासियों को मृतकों में से जी उठाया जाएगा, तो उनकी मानव देह बदल जाएगी। वे केवल आत्मा नहीं होंगे। उनके पास यीशु के मृतकों में से जी उठने के बाद की देह जैसी देह होगी। यही वह बात है जो स्वर्गीय मनुष्य के समान होने के बारे में पौलुस ने कही थी। उनकी नई देह उनकी पुरानी देह से कही अधिक कार्य करने में सक्षम होगी। उनकी नई देह सदा के लिए बानी रहेगी।

पौलुस इसे विजय गीत के साथ मनाते हैं। मसीह जीवित हैं और मृत्यु की शक्ति छीन ली गई है! जिस प्रकार से लोग पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करते हैं, वह महत्वपूर्ण है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि मृत्यु जीवन का अंत नहीं है।

1 कुरिन्थियों 16:1–24

कुरिन्थ के विश्वासियों ने अन्य गैर-यहूदी कलीसियाओं के साथ मिलकर धन की भेंट तैयार किया। यह यरूशलेम के जरूरतमंद यहूदी विश्वासियों के लिए था।

पौलुस ने उन्हें उनके वरदान को सही और व्यवस्थित तरीके से तैयार करने के बारे में निर्देश दिए। पौलुस ने इस भेंट के बारे में रोमियों 15:25–28 और 2 कुरिन्थियों 8–9 में भी लिखा। वह भेट को इकट्ठा करने के लिए कुरिन्थ की कलीसिया का दौरा करने की आशा कर रहा था।

पौलुस ने कई मित्रों का उल्लेख किया जिन्हें वह और कुरिन्थ के विश्वासी जानते थे। ये मित्र उन लोगों के लिए उदाहरण थे जो कड़ी मेहनत करते हैं, उदारता से देते हैं और दूसरों की सेवा करते हैं। पौलुस चाहता था कि कुरिन्थ के लोग उनके साथ अच्छा व्यवहार करें और उनके उदाहरण का अनुसरण करें।

पौलुस ने अपनी पत्री को समाप्त करते हुए तैयार रहने, साहसी होने और प्रेमपूर्ण होने के आदेश दिए। इसमें विश्वासियों से एक-दूसरे का पवित्र चुम्बन के साथ अभिवादन करने के लिए भी कहा गया। इस प्रथा ने दिखाया कि विश्वासियों ने एक-दूसरे को परिवार के सदस्यों के रूप में स्वीकार किया। यह भी दिखाया कि वे एक-दूसरे के साथ सम्मान और आदर के साथ व्यवहार करते थे। यह प्रभु और सभी विश्वासियों के प्रति अपने प्रेम को दिखाने का तरीका था।